عربی हिन्दी – अरबी ھندی

आसान क़ायदा

हिन्दी जानने वालों के लिए
क़ुरआन का प्राइमर

मधुर सन्देश संगम

عربی हिन्दी – अरबी هندی

आसान क़ायदा

हिन्दी जानने वालों के लिए
क़ुरआन का प्राइमर

मधुर सन्देश संगम
E-20, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव जामिआनगर, नई दिल्ली-25

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह - दयावान कृपाशील के नाम से

दो शब्द

मुझे ऐसे बहुत से मुसलमानों से मिलने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है जो कुरआन मजीद की तिलावत करना चाहते हैं, मगर हिन्दी मीडियम से पढ़े होने की वजह से ऐसा नहीं कर पाते, इसलिए ऐसे कुरआन की तलाश में रहते हैं, जिसमें अरबी को हिन्दी यानी देवनागरी में लिखा हो । बाज़ार में ऐसे कुरआन मिल जाते हैं, लेकिन चूंकि उनके ज़रीये सही तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) अदा नहीं हो पाता इसलिए लोग उनसे मुतमइन नहीं हो पाते !

ऐसे लोगों की ज़रूरत को सामने रख कर यह प्राइमर तैयार किया गया है । इसमें तमाम हिदायतें हिन्दी में दी गई हैं । सभी हर्फ़ और लफ़्ज़ हिन्दी में भी लिखे गये हैं । उम्मीद है कि इन्शाअल्लाह हिन्दी जानने वाले लोग इस प्राइमर के ज़रीये कुरआन पढ़ना सीख सकते हैं ।

कुरआन मजीद अल्लाह तआला ने बन्दों की हिदायत और रहनुमाई के लिए नाज़िल किया है, इसलिए तिलावत के साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि इसको समझा जाए, जिसके लिए हिन्दी और अंग्रेज़ी के तर्जुमों से मदद ली जानी चाहिये ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें कुरआन पढ़ने,उसे समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन !

रामनगर
(नैनीताल) (उ.प्र.)

फ़रहत हुसैन

ज़रूरी हिदायतें

आपने क़ुरआन को पढ़ने का इरादा किया; आपका यह इरादा बहुत नेक और मुबारक है। हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह आपके इस इरादे को पूरा कराये। इस मक़सद के लिए लिखी गई प्राइमर आपके हाथों में है। प्राइमर शुरू करने से पहलें कुछ बातें ध्यान में रखें :-

अरबी दायें से बायें लिखी होती है, इसीलिए हमने यह प्राइमर दाहिनी तरफ से शुरू किया है।

अरबी के हर्फ़ अपनी पूरी शक्ल में भी बनते हैं और छोटी शक्ल में भी। ध्यान रहे कि छोटी शक्ल में भी ये अपनी पूरी आवाज़ देते हैं।

हर्फ़ के निशानों और नुक्तों (बिन्दुओं) को ध्यान में रखें। उन्हीं के ज़रीये हर्फ़ (अक्षर) पहचाने जाते हैं।

प्राइमर ख़त्म करने के बाद आप क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दें। अच्छा होगा कि किसी जानने वाले को पढ़कर सुनायें, जिससे कोई ग़लती न रह जाये।

एक

आवाज़	अरबी नाम	छोटी शक्ल	पूरी शक्ल
अ	अलिफ़		ا
ब	बा	بـ	ب
त	ता	تـ	ت
स	सा	ثـ	ث
ज	जीम	جـ	ج
ह	हा	حـ	ح
ख़	ख़ा	خـ	خ
द	दाल		د
ज़	ज़ाल		ذ
र	रा		ر ـر
ज़	ज़ा	ـز	ز
स	सीन	سـ	س
श	शीन	شـ	ش
स	साद	صـ	ص
ज़ या द	ज़ाद या दाद	ضـ	ض
त	तो		ط
ज़	ज़ो		ظ
अ	ऐन	عـ ـعـ	ع

आवाज़	अरबी नाम	छोटी शक्ल	पूरी शक्ल
ग़	ग़ैन	غ غ	غ
फ़	फ़ा	ف	ف
क़	क़ाफ़	ق	ق
क	काफ़	ک	ك
ल	लाम	ل	ل
म	मीम	م	م
न	नून	ن	ن
व	वाव		و
ह	हा		ه ، ھ
अ	हमज़ा		ء
य	या	ي	ي ـي

अलिफ़ ا वाव و या ي अरबी में हर्फ़ (अक्षर) भी हैं और मात्राएँ भी हैं जिनका बयान आगे आ रहा है।

अरबी में एक आवाज़ के लिए कई हर्फ़ हैं :-

अ	ا ع ء
त	ت ط
स	ث س ص
ह	ح ه
ज़	ذ ز ض ظ

इनकी आवाज़ में थोड़ा फ़र्क़ होता है,जो किसी जानने वाले से सीखा जा सकता है।

दो

ا د ذ ر ز و

ये छः हर्फ़ एक तरफ़ मिलते हैं; यानी इनके दाहिनी तरफ़ वाला हर्फ़ मिल जाता है :-

ब + अ = बा	ب + ا = با
ब + र = बर	ب + ر = بر

मगर बाईं ओर वाला हर्फ़ मिलकर नहीं बनता :-

र + ब = रब	ر + ب = رب

इन छः हर्फ़ के अलावा बाक़ी हर्फ़ दोनों तरफ़ मिल जाते है । ये जब लफ़्ज़ के शुरू या बीच में आते हैं,तो छोटी शक्ल में होते हैं और जब अख़ीर में आते हैं तो पूरी शक्ल में :-

क - श - फ़	ك + ش + ف = كشف
ख़ - त - म	خ + ت + م = ختم
म - क - स	م + ك + ث = مكث

हर्फ़ों को पहचानिए और मिलने की हालत पर ध्यान दीजिए :-

و + ر + د = ورد	ز + ع + م = زعم
د + ر + س = درس	ف + ت + ح = فتح
ر + ز + ق = رزق	ش + ك + ر = شكر
و + ل + د = ولد	

तीन

ज़बर

'अ' की मात्रा के लिए हिन्दी में कोई मात्रा नहीं लगाई जाती, मगर अरबी में हर्फ़ के ऊपर एक टेढ़ा ड़ेश (ـَـ) लगाया जाता है जिसे ज़बर कहते है :-

अ	اَ	
ब	بَ	
त	تَ	
अ - म - र	اَمَرَ	اَ + مَ + رَ
क - स - ब	كَسَبَ	كَ + سَ + بَ
ह - स - द	حَسَدَ	حَ + سَ + دَ
फ़ - अ - ल	فَعَلَ	فَ + عَ + لَ
ब - ल - ग़	بَلَغَ	بَ + لَ + غَ
क - फ़ - र	كَفَرَ	كَ + فَ + رَ
अ - ख़ - ज़	اَخَذَ	اَ + خَ + ذَ
ज़ - क - र	ذَكَرَ	ذَ + كَ + رَ
र - फ़ - अ	رَفَعَ	رَ + فَ + عَ
क - त - म	كَتَمَ	كَ + تَ + مَ

ब - अ - स	بَعَثَ	بَ + عَ + ثَ
ब - त - ल	بَطَلَ	بَ + طَ + لَ
व - ह - न	وَهَنَ	وَ + هَ + نَ
अ - ब - स	عَبَسَ	عَ + بَ + سَ
ल - ज़ - ह - ब	لَذَهَبَ	لَ + ذَ + هَ + بَ

चार

ज़ेर

इ (ि) की मात्रा के लिए हर्फ़ के नीचे टेढ़ा डेश (ज़ेर) ـِـ लगा होता है :-

इ إِ

बि بِ

जि جِ

दि دِ

कि كِ

'अ'और'इ'की मात्राओं यानी ज़बर और ज़ेर के साथ नीचे लिखे लफ़्ज़ों को ध्यान से पढ़िये:-

इबिलि	إِبِلِ	إِ + بِ + لِ
इ - र - म	إِرَمَ	إِ + رَ + مَ
बख़ि - ल	بَخِلَ	بَ + خِ + لَ

अज़ि - न		اَ+ذِ+نَ
वरि - स	وَرِثَ	وَ+رِ+ثَ
अमि - ल	عَمِلَ	عَ+مِ+لَ
अलि - म	عَلِمَ	عَ+لِ+مَ
शहि - द	شَهِدَ	شَ+هِ+دَ
अमि - न	اَمِنَ	اَ+مِ+نَ
रकि - ब	رَكِبَ	رَ+كِ+بَ
ख़सि - र	خَسِرَ	خَ+سِ+رَ
नसि - य	نَسِيَ	نَ+سِ+يَ
बक़ि - य	بَقِيَ	بَ+قِ+يَ
ख़शि - य	خَشِيَ	خَ+شِ+يَ
सफ़ि - ह	سَفِهَ	سَ+فِ+هَ
क़ - दरि	قَدَرِ	قَ+دَ+رِ

पाँच

पेश

(ु) की मात्रा उ के लिए हर्फ़ के ऊपर (ـُـ) इस तरह का निशान लगाया जाता है,जिसे **पेश** कहते हैं :-

उ	اُ
हु	حُ
ख़ु	خُ
फ़ु	فُ

तीनों मात्राओं के साथ नीचे लिखे लफ़्ज़ों को पढ़िए :-

उज़ि - न	اُذِنَ	اُ + ذِ + نَ
उख़ि - ज़	اُخِذَ	اُ + خِ + ذَ
उमि - र	اُمِرَ	اُ + مِ + رَ
क़ुति - ल	قُتِلَ	قُ + تِ + لَ
ग़ुलि - ब	غُلِبَ	غُ + لِ + بَ
कुति - ब	كُتِبَ	كُ + تِ + بَ
ख़ुलि - क़	خُلِقَ	خُ + لِ + قَ
सुहुफ़ि	صُحُفِ	صُ + حُ + فِ
कबु - र	كَبُرَ	كَ + بُ + رَ

बसु - र	بَصُرَ	بَ+صُ+رَ
ज़उ - फ़	ضَعُفَ	ضَ+عُ+فَ
सक़ु - ल	ثَقُلَ	ثَ+قُ+لَ
यजिदु	يَجِدُ	يَ+جِ+دُ
यइदु	يَعِدُ	يَ+عِ+دُ
यरि - सु	يَرِثُ	يَ+رِ+ثُ

छः

जज़्म

जिस हर्फ़ पर यह निशान ْ (जज़्म) लगा होता है, वहाँ आकर आवाज़ रुक जाती है :-

बल	بَلْ
क़ुल	قُلْ
रब	رَبْ
मन	مَنْ
हल	هَلْ
हम्दु	حَمْدُ
लस् - त	لَسْتَ
नअ - बुदु	نَعْبُدُ

सात

'आ' की मात्रा

'आ' की मात्रा के लिए दो तरीक़े हैं :-

(1) हर्फ़ में अलिफ़ | लगा होता है :-

मा - ल - क	مَالَكَ	مَ+ا+لَ+كَ
क़ा - त - ल	قَاتَلَ	قَ+ا+تَ+لَ
क़ा - स - म	قَاسَمَ	قَ+ا+سَ+مَ
ज़ालि - क	ذَالِكَ	ذَ+ا+لِ+كَ
आलम	عَالَمُ	عَ+ا+لَ+مُ
अख़ाफ़ु	اَخَافُ	اَ+خَ+ا+فُ
किता - ब - क	كِتَابَكَ	كِ+تَ+ا+بَ+كَ
शानिअ - क	شَانِئَكَ	شَ+ا+نِ+ءَ+كَ
यशाउ	يَشَاءُ	يَ+شَ+ا+ءُ

(२) हर्फ़ पर खड़ा ज़बर । लगा होता है :-

आ– म - न	اٰمَنَ	रहमानि	رَحْمٰنِ
आ–द - मु	اٰدَمُ	अल्हाकुमु	اَلْهٰكُمُ
अस्हाबु	اَصْحٰبُ	अता - क	اَتٰكَ
आतिना	اٰتِنَا	हाज़ा	هٰذَا

आठ

'ई' की मात्रा

ई (ी) की मात्रा के लिए भी दो तरीक़े हैं :-

(!) या ی छोटी शक्ल ـِیـ का इस्तेमाल ज़ेर के साथ किया जाता है :-

ई	اِیْ	हदीसु	حَدِیْثُ
बी	بِیْ	जीदिहा	جِیْدِهَا
री	رِیْ	अबाबी - ल	اَبَابِیْلَ
फ़ी	فِیْ	आ - ख़री - न	اٰخَرِیْنَ
अख़ी	اَخِیْ	सिनी - न	سِنِیْنَ
अबी	اَبِیْ	क़वारी - र	قَوَارِیْرَ
तजरी	تَجْرِیْ	शयाती - न	شَیَاطِیْنَ
क़ी - ल	قِیْلَ	शाकिरी - न	شَاكِرِیْنَ
दीनि	دِیْنِ	सादिक़ी - न	صَادِقِیْنَ
दीनी	دِیْنِیْ	ख़ाइफ़ी - न	خَائِفِیْنَ
शहीदु	شَهِیْدُ		
बनी - न	بَنِیْنَ		
युरीदु	یُرِیْدُ		

(2) खड़ा ज़ेर । लगा होता है :-

ईलाफ़ि	اِلٰفِ
बिही	بِهٖ
व-ल दिही	وَلَدِهٖ
त - आ मिही	طَعَامِهٖ
क़ब - लिही	قَبْلِهٖ
नफ़सिही	نَفْسِهٖ
साहिबतिही	صَاحِبَتِهٖ
ज़हरिही	ظَهْرِهٖ
इब्राही - म	اِبْرٰهٖمَ

ध्यान से पढ़िए :-

مِنْ اٰمْرِیْ ـ ظَالِمِیْنَ ـ مِثْلِهٖ

بِکِتَابِیْ ـ مَسَاکِیْنَ ـ فِیْ جِیْدِهَا

لَاشَرِیْکَ لَكَ ـ اَلْحَمْدُ

نَسْتَعِیْنَ ـ مِنْ عِبَادِهٖ ـ هٰذِهٖ

नौ

ऊ की मात्रा

ऊ (ु) की मात्रा के लिये :-

(1) वाव و पेश के साथ :-

ऊ	أُوْ
जू	جُوْ
ज़ू	ذُوْ
यूसुफ़ु	يُوْسُفُ
अऊज़ु	أَعُوْذُ
सुदूरि	صُدُوْرِ
यद - ख़ुलू - न	يَدْخُلُوْنَ
यकूनु	يَكُوْنُ
क - फ़-रू	كَفَرُوْا
क़ूला	قُوْلًا
तअ - बुदू - न	تَعْبُدُوْنَ
यसिफ़ू - न	يَصِفُوْنَ

युहीतू - न	يُحِيْطُوْنَ
तुरीदू - न	تُرِيْدُوْنَ
क़ - तलूहु	قَتَلُوْهُ
हारू - न	هَارُوْنَ
हारू - त	هَارُوْتَ
दाऊ - द	دَاوُوْدَ
क़ुलूबिहिम	قُلُوْبِهِمْ
युख़ादिऊ - न	يُخَادِعُوْنَ
युक़ातिलू - न	يُقَاتِلُوْنَ
वक़ूदुहा	وَقُوْدُهَا

(2) उल्टा पेश ٗ जो ज़्यादातर हा ہ पर इस्तेमाल होता है :-

लहू	لَهٗ	अमरुहू	اَمْرُهٗ
अजरुहू	اَجْرُهٗ	मिस्लुहू	مِثْلُهٗ
ख़ - ल - क़हू	خَلَقَهٗ	म - अहू	مَعَهٗ
रसूलुहू	رَسُوْلُهٗ	दाऊ - द	دَاوٗدَ

दस

ऐ की मात्रा

ऐ (ँ) की मात्रा के लिए या ے छोटी शक्ल ـيـ का इस्तेमाल होता है; मिलने वाले हर्फ़ पर ज़बर होता है :-

ऐ	اَےْ	सुलैमानु	سُلَيْمٰنُ
कै	كَےْ	असै - त	عَصَيْتَ
कै - फ़	كَيْفَ	बै - नकुम	بَيْنَكُمْ
बैति	بَيْتِ	व रऐ - त	وَرَاَيْتَ
सैफ़ि	صَيْفِ	लारै - ब	لَارَيْبَ
ग़ैबि	غَيْبِ	आतैना	اٰتَيْنَا
इलैना	اِلَيْنَا	लिकैला	لِكَيْلَا
अलैना	عَلَيْنَا	श - फ़तैनि	شَفَتَيْنِ

عَلَيْكَ	अलै - क	اَلَيْسَ	अलै - स
اَرَءَيْتَ	अ - रऐ - त	عَلَيْهِمْ	अलैहिम
غَيْرُهٗ	ग़ैरुहू	عَيْنَيْكَ	ऐनै - क

ध्यान से पढ़िए :-

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ــ اِذْ رَمَيْتَ

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ــ لَمْ يَلِدْ

ग्यारह

औ की मात्रा

औ (اَوْ) की मात्रा के लिए वाव و इस्तेमाल होता है; मिलने वाले हर्फ़ पर ज़बर होता है :-

لَقَوْلُ	लक़ौलु	اَوْ	औ
فِرْعَوْنَ	फ़िरऔ - न	بَوْ	बौ
فَسَوْفَ	फ़सौ - फ़	يَوْمَ	यौ - म
عَفَوْنَا	अफ़ौना	قَوْلِ	क़ौलि
لِقَوْمِهٖ	लिक़ौमिही	لَوْحُ	लौहु
		خَلَوْ	ख़लौ
		سَوْفَ	सौ - फ़
		تَوَاصَوْ	तवासौ

बारह

दोहरी आवाज़

जिस हर्फ़ पर तश्दीद ّ लगी हो वह दोहरी आवाज़ देता है :-

इन्ना	إِنَّا	वलिय्यु	وَلِيُّ
(न्न के लिए نّ)		फ़ - हय्यू	فَحَيُّوْ
इल्ला	إِلَّا	रक्क - बक	رَكَّبَكَ
मुहम्मद	مُحَمَّدٌ	अय्युकुम	اَيُّكُمْ
ख़फ़्फ़त	خَفَّتْ	अल्लज़ी - न	اَلَّذِيْنَ
इन् - न	اِنَّ	सब्बिह	سَبِّحْ
सुम् - म	ثُمَّ	लिल्लाहि	لِلّٰهِ
मिन्नी	مِنِّيْ	इय्या - क	اِيَّاكَ
शर्रि	شَرِّ	सद्द - क़	صَدَّقَ
क़द्दमत	قَدَّمَتْ		
रब्बि	رَبِّ		

ध्यान से पढ़िए :-

اَوَّلَ ـ لَمَّا ـ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ـ تَبَّتْ يَدَا

اَلَّذِىْ ـ سَبِّحْ ـ يَحُضُّ ـ رَبَّنَا

يُكَذِّبُ ـ مُتَّقِيْنَ ـ لَانُفَرِّقُ بَيْنَ

तेरह

तनवीन

दो ज़बर(ً)दो ज़ेर(ٍ)दो पेश(ٌ)को तनवीन कहते हैं। इनका इस्तेमाल इस तरह है :-

(1) दो ज़बर(ً)अन की आवाज़ निकालते हैं, इसका इस्तेमाल ज़्यादातर अलिफ़ ا के साथ होता है :-

अन	اً	**इज़न**	إِذًا
बन	بًا	**इ - वजन**	عِوَجًا
अ - बदन	اَبَدًا	**मफ़ाज़न**	مَفَازًا
क़ौमन	قَوْمًا	**नफ़सन**	نَفْسًا
म - सलन	مَثَلًا	**अताअन**	عَطَآءً
ख़ैरन	خَيْرًا	**युसरन**	يُسْرًا

(2) दो ज़ेर (ٍ) लगे होने पर 'इन' की आवाज़ निकलती है :-

इन	اٍ	**नफ़सिन**	نَفْسٍ
बिन	بٍ	**अ - हदिन**	اَحَدٍ
अमरिन	اَمْرٍ	**हक़्क़िन**	حَقٍّ
ल - हबिन	لَهَبٍ	**बि - वकीलिन**	بِوَكِيْلٍ
यौमिन	يَوْمٍ	**बि - बईदिन**	بِبَعِيْدٍ

शफ़ीइन	شَفِيْعٍ
शैइन	شَيْءٍ
ख़िलाफ़िन	خِلَافٍ
बिग़ाफ़िलिन	بِغَافِلٍ

(3) दो पेश (ٌ) उन की आवाज़ देते हैं :-

उन	اُ
कुतुबुन	كُتُبٌ
किताबुन	كِتَابٌ
म - रज़ुन	مَرَضٌ
अलीमुन	اَلِيْمٌ
अज़ीज़ुन	عَزِيْزٌ
अदुव्वुन	عَدُوٌّ
सलामुन	سَلَامٌ
नारुन	نَارٌ
वाबिलुन	وَابِلٌ
हकीमुन	حَكِيْمٌ
शैउन	شَيْءٌ

चौदह

गोल ते

गोल ते ة की आवाज़ ता ت की तरह होती है :-

जन्नतिन	جَنَّةٍ
बाक़ियतन	بَاقِيَةً
सू - रतिन	صُوْرَةٍ
ताइ - फ़तुन	طَآئِفَةٌ
वसिय्यतुन	وَصِيَّةٌ

मगर जब जुमले के अख़ीर में (ة) आती है और वहां रुक जाते हैं तो (ه) ह की आवाज़ देती है :-

जन्नह	جَنَّةٌ ○
ब - र - रह	بَرَرَةٍ ○
दाब्बह	دَآبَّةٍ ○

ध्यान से पढ़िए :-

حَسَنَةً ـ رَاضِيَةً ـ مَرْضِيَّةً ـ كَاذِبَةٍ ـ لَيْلَةُ ـ مَلٰٓئِكَةٌ

رَحْمَةٍ ○ مَشْئَمَةٍ ○ خَاطِئَةٍ ○

قَيِّمَةٌ ○ حُطَمَةٍ ○ مُمَدَّدَةٍ ○

पन्द्रह

'आ' की मात्रा के लिए जो अलिफ़ ا लगाया जाता है उस पर कोई निशान नहीं होता (देखो सबक़ सात) । जब अलिफ़ पर जज़्म का निशान लगा हो तो यह अलिफ़ ا के बजाय हमज़ा ء की आवाज़ देता है और झटके से पढ़ा जाता है :-

इक़ - रअ	اِقْرَأْ	इक़रा नहीं
क अ - सन	كَأْسًا	कासन नहीं
तअमुरु - क	تَأْمُرُكَ	तामुरु - क नहीं
तअ - वीलि	تَأْوِيْلِ	तावीलि - नहीं
यअतीहिम्	يَأْتِيْهِمْ	यातीहिम नहीं

सोलह

नून ن या दो ज़बर, दो ज़ेर, दो पेश के बाद बा ب आये तो इनकी आवाज़ 'न' के बजाय 'म' की निकलती है और इसलिए उस जगह छोटी मीम م लिखी होती है :-

मिम - बादि	مِنْۢ بَعْدِ	मिन नहीं
मिम बैनि	مِنْۢ بَيْنِ	मिन नहीं
अम्बिया	اَنْۢبِيَآءِ	अन नहीं
यम्बग़ी	يَنْۢبَغِيْ	यन नहीं
क़ाफ़िरिम बिही	كَافِرٍۢ بِهٖ	काफ़िरिन नहीं
अवानुम बै - न ज़ालि - क	عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ	
बसीरुम - बिमा यामलू - न	بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ	

सतरह

नून ن ,दो ज़बर, दो ज़ेर, दो पेश के बाद वाव و या, 'या' ی आये तो नून गुन्ना ں (चन्द्र बिन्दी) की आवाज़ निकलती है :-

व - मंय्यू - क़	وَمَنْ يُّوْقَ	व मन नहीं
व मंय्यु - बद्दिल	وَمَنْ يُّبَدِّلُ	व मन नहीं
ख़ैरंय्य - रहू	خَيْرًا يَّرَهُ	ख़ैरन नहीं
उम्म - तंव - व–स– तन	اُمَّةً وَّسَطًا	उम्मतन नहीं
व - इंव - व - जद्ना	وَاِنْ وَّجَدْنَا	व इन नहीं
ला फ़ारिज़ुंव - वला बिकरुन	لَا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ	
ग़ै - र बाग़िंव वला आदिन	غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ	

अट्ठारह

दो ज़बर, दो ज़ेर और दो पेश जब तश्दीद वाले हर्फ़ से मिलते हैं तो एक ज़बर या ज़ेर या पेश की तरह आवाज़ देते हैं :-

मता अल्लकुम	مَتَاعًا لَّكُمْ
फ़रीक़ुम् मिन्हुम्	فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ
स - म - रतिर्रिज़ - क़न	ثَمَرَةٍ رِّزْقًا
अज़वा जुम्मुतह् ह- र - तुन	اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ
मुसल्ल म- तुल्ला शिय - त	مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ

उन्नीस

किसी हर्फ़ पर जज़्म हो और उसके बाद वाले हर्फ़ पर तशदीद (ّ) हो तो जज़्म वाला हर्फ़ नहीं पढ़ा जायेगा :-

फ़ - इल्लम — فَإِنْ لَّمْ — फ़ - इन लम नहीं

यकुल्लहू — يَكُنْ لَّهُ — यकुन लहू नहीं

मर्रब्बु - क — مَنْ رَّبُّكَ — मन रब्बु - क नहीं

मिर्रब्बिही — مِنْ رَّبِّهٖ

मिल्ल - दुन्ना — مِنْ لَّدُنَّا

मिम - म - सदिन — مِنْ مَّسَدٍ

नख़लुक़्कुम — نَخْلُقْكُّمْ

अशहत्तुहुम — اَشْهَدْ تُّهُمْ — अशहद नहीं

क़त्त - बय्य - न — قَدْ تَّبَيَّنَ — क़द नहीं

लक़त तक़त्त - अ — لَقَدْ تَّقَطَّعَ

इरकम्मअना — اِرْكَبْ مَّعَنَا

उजीबद् - दअव - तुकुमा — اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا

बीस

जिस हर्फ़ पर मद का निशान ~ लगा हो उसे खींच कर पढ़ा जायेगा :-

सवाउन	سَوَآءٌ	वा को खींच कर पढ़िये
फ़ - लहू	فَلَهٗ	हू को खींच कर पढ़िये
गुसाअन	غُثَآءً	सा को खींच कर पढ़िये
आइलन	عَآئِلًا	आ को खींच कर पढ़िये

ध्यान से पढ़िए :-

جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ ـ مَا شَآءَ رَكَّبَكَ

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ـ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ـ اَلَمْ تَرَ

كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ ـ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ـ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ

इक्कीस

कुछ हर्फ़ जो पढ़े नहीं जाते

अरबी में कहीं कहीं कुछ हर्फ़ केवल लिखे होते हैं, मगर मौन रहते हैं, पढ़े नहीं जाते उन के उसूल और मिसालें यहां नम्बरवार दी जा रही हैं :-

(1) या ے ى से पिछले हर्फ़ पर खड़ा ज़बर हो तो 'या' नहीं पढ़ी जायेगी :-

इला إِلٰى

अला عَلٰى

मूसा مُوْسٰى

ईसा عِيْسٰى

(2) वाव و के पिछले हर्फ़ पर खड़ा ज़बर होने पर वाव नहीं पढ़ा जायेगा :-

सलातुन صَلٰوةٌ

ज़कातुन زَكٰوةٌ

हयातिन حَيٰوةٍ

(3) लफ़्ज़ों के अख़ीर में वाव साकिन (وْ) के बाद आमतौर से अलिफ़ ا लिखा होता है, जिस पर कोई निशान नहीं होता, यह अलिफ़ नहीं पढ़ा जाता :-

उतू أُتُوْا

ख़ुज़ू خُذُوْا

कुलू كُلُوْا

मशौ	مَشَوْا
क - फ़रू	كَفَرُوْا
उदऊ	اُدْعُوْا
स - जदू	سَجَدُوْا
न - क़मू	نَقَمُوْا

(4) कुछ लफ़्ज़ों के शुरू में अलिफ़ ا और लाम ل होते है । ऐसे लफ़्ज़ों से पहले जब दूसरे लफ़्ज़ मिलते हैं,तो ये दोनों मौन हो जाते हैं । लाम ل सिर्फ़ उस लफ़्ज़ में पढ़ा जायेगा, जिसमें इस पर कोई निशान लगा हो वरना नहीं :-

मिनस् - समाइ	مِنَ السَّمَآءِ	अलिफ़, लाम मौन हैं
रब्बिल आलमी - न	رَبِّ الْعَالَمِيْنَ	अलिफ़ मौन है
अल्लाहु	اَللّٰهُ	लाम मौन है
वल्लाहु	وَاللّٰهُ	अलिफ़ और लाम मौन हैं
यौमिद्दीनि	يَوْمِ الدِّيْنِ	अलिफ़ और लाम मौन हैं
सिरातल्लज़ी - न	صِرَاطَ الَّذِيْنَ	अलिफ़ मौन है

(5) एक लफ़्ज़ जब दूसरे से मिलता है और पहले लफ़्ज़ के अख़ीर में ى و ا हो; दूसरे लफ़्ज़ के शुरू के हर्फ़ पर जज़्म या तशदीद ّ हो, तो ى و ا को नहीं पढ़ा जायेगा :-

रब्बुनल्लाहु رَبُّنَا اللّٰهُ

(निशान लगा X अलिफ़ नहीं पढ़ा जायेगा, उसके आगे के अलिफ़ और लाम पिछले नियम 4, के मुताबिक़ नहीं पढ़े जायेंगे ।)

अक़ीमुस्सलातु أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ

(अक़ीमू नहीं, क्योंकि वाव नहीं पढ़ा जायेगा।)

इलल्लाहि إِلَى اللّٰهِ

वस्जुद् وَاسْجُدْ वास्जुद् नहीं

फ़न्ज़ुर فَانْظُرْ

इहदि नस्सिरा - त اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

(6) أَنَا यह लफ़्ज़ जहाँ अकेला आता है, यानी दूसरे लफ़्ज़ से नहीं मिलता तो यह अना नहीं बल्कि 'अ - न' पढ़ा जाता है; इसका दूसरा अलिफ़ नहीं पढ़ा जायेगा - अ-न أَنَا

(7) مَلَأٌ को मलाउ नहीं, म - ल - उ पढ़ा जायेगा :-

म - ल - इही مَلَائِهٖ

क़ालल म - ल - उ قَالَ الْمَلَأُ

(8) नीचे के लफ़्ज़ों में و मौन रहता है :-

उलाइ-क أُولٰٓئِكَ ऊलाइ-क नहीं

उलू أُولُوا ऊलू नहीं

(9) ثَمُودَا यह समू-द पढ़ा जायेगा, न कि समूदा।

बाईस

कुरआन में कुछ लफ़्ज़ ऊपर के उसूलों से अलग (अपवाद) हैं ऐसे लफ़्ज़ और उनकी कुरआन में जगह बताई जाती है :-

		पारा	रुकू
अ - फ़इन	اَفَائِنْ	4	6
त - बूअ	تَبُوْءَاْ	6	9
न - बइल मुर्सली - न	نَبَاْءِ الْمُرْسَلِيْنَ	6	34
ल - औज़ऊ	لَاْ اَوْضَعُوْا	10	13
लन्नद उ - व	لَنْ نَّدْعُوَاْ	15	14
लिशैइन	لِشَاْئٍ	15	16
लाकिन - न	لٰكِنَّاْ	15	17
ल - अज़बहन्नहू	لَاْاَذْبَحَنَّهٗ	19	17
ल - इलल्जहीमि	لَاْاِلَى الْجَحِيْمِ	23	6
लियबलु - व	لِيَبْلُوَاْ	26	5
नबलु - व	نَبْلُوَاْ	26	8
ल - अन्तुम्	لَاْاَنْتُمْ	28	5
सलासि - ल	سَلَاسِلَاْ	29	19
क़वारी - र	قَوَارِيْرَاْ	29	19

तेइस

छोटा नून

कहीं-कहीं दो लफ़्ज़ों के बीच एक छोटा-सा नून (نِ) लिखा जाता है । यह अगले लफ़्ज़ से मिलाकर पढ़ा जाता है :-

यौ - म इज़िनिलहक़्क़ु   يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ

इफ़्कु निफ़्तराहु   اِفْكُ نِ افْتَرٰهُ

नूहु निबन - हू   نُوْحُ نِ ابْنَهٗ

लह - व - निन्फ़ज़्ज़ू   لَهْوَ نِ انْفَضُّوْا

चौबीस

ठहरने का तरीक़ा

जुमला पूरा होने पर ठहरा जाता है । जिस लफ़्ज़ के बाद ठहरा जाता है उसकी हरकतों (ज़ेर ज़बर वग़ैरह) की कैफ़ियत कभी-कभी बदल जाती है, जिन्हे नीचे दिया जा रहा है । जुमला पूरा होने के लिये आयत का निशान ○ लगा होता है, जिसकी तफ़्सील अगले सबक़ में देखें :-

(1) लफ़्ज़ का आख़िरी हर्फ़ साकिन यानी जज़्म वाला हो, तो उसी तरह पढ़ा जायेगा :-

मिन्हुम्   مِنْهُمْ ○   सद्‌री   صَدْرِىْ ○

(2) ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर, दो पेश जज़्म हो जाते हैं :-

यूक़िनून   يُوْقِنُوْنَ ○   रुकने पर यूक़िनू - न नहीं

नस्तईन نَسْتَعِيْنُ ○

हाफ़िज़ حَافِظٌ ○

नसीर نَصِيْرٌ ○

(3) दो ज़बर अलिफ़ के साथ हों - اً - तो अलिफ़ की आवाज़ रह जाती है :-

कैदा كَيْدًا ○ रहीमा رَحِيْمًا ○

(4) هٗ هٖ हा ه में बदल जाते हैं :-

बिह ○ بِهٖ ज़ - क - रह ذَكَرَهٗ ○

अ - म - रह ○ اَمَرَهٗ

लि-नफ़सिह ○ لِنَفْسِهٖ

(5) गोल ता ةٌ हा ه में बदल जाती है :-

हामियह حَامِيَةٌ ○ तज़किरह تَذْكِرَةٌ ○

(6) छोटे नून نِ से पहले अगर रुकना हो तो न पढ़ा जायेगा :-

لُمَزَةِ نِ الَّذِىْ ○

आयत पर न रुकें तो - **लु - म - ज़ति निल्लज़ी**

आयत पर रुकें तो - **लु - म - ज़ह अल्लज़ी**

पच्चीस

ठहरने के निशान

हर ज़बान (भाषा) में जुमला पूरा होने पर ठहरने और कम ज़्यादा ठहरने के निशान (चिह्न) होते हैं; जैसे हिन्दी में पूर्ण विराम, कॉमा वग़ैरह । अरबी में भी इसके लिए कुछ निशान हैं जो नीचे दिये जा रहे है :-

(1) ○ इस गोले को आयत कहते हैं । यह जुमला पूरा होने का निशान है, इस पर रुकिये ।

(2) م इबारत के बीच में या आयत के साथ छोटी-सी मीम مٓ बनी हो वहां ज़रूर ठहरिये, वरना मतलब ग़लत हो सकता है ।

(3) طٓ या ط इस पर रुकिये ।

(4) ج इस पर रुकना जायज़ है ।

(5) لا बग़ैर आयत के हो तो न रुका जाये ।

(6) ○ز इस पर चाहे रुकें, चाहे न रुकें ।

(7) سكتة जहां यह लफ़्ज़ लिखा हो, वहां सांस तोड़े बग़ैर थोड़ा-सा रुका जाये ।

नोट :-

क़ुरआन पढ़ने में ठहरने की जगहों पर ही साँस तोड़ना चाहिए । अगर इबारत के बीच में (यानी जहां ठहरने का निशान न हो) साँस टूट जाये, तो आख़िरी लफ़्ज़ को पिछले सबक़ की तरह पढ़ें और फिर उस लफ़्ज़ को दोहराते हुए आगे पढ़ें ।

छब्बीस

कुछ सूरतों के शुरु में कुछ हर्फ़ दिये होते हैं, इनको पूरा पढ़ा जाता है । जिस पर मद ~ हो उसे खींच कर पढ़ें । ऐसे सारे हर्फ़ नीचे दिये जा रहे हैं :-

साद	صٓ
क़ाफ़	قٓ
नून	نٓ
ता - सीन	طٰسٓ
यासीन	يٰسٓ
ताहा	طٰهٰ
हामीम	حٰمٓ
ऐन - सीन - क़ाफ़	عٓسٓقٓ
अलिफ़ - लाम - मीम	الٓمٓ
अलिफ़ - लाम - रा	الٓرٰ
अलिफ़ - लाम - मीम - रा	الٓمٓرٰ
ता - सीम - मीम	طٰسٓمٓ
अलिफ़ - लाम - मीम - साद	الٓمٓصٓ
काफ़ - हा - या - ऐन - साद	كٓهٰيٰعٓصٓ

सत्ताईस

अब आप कुरआन पढ़ना शुरू कर दें । कुछ बातें याद रखें :-

* जब भी कुरआन पढ़ना शुरू करें पहले पढ़े :-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश शैतानिर्रजीम

* फिर पढ़ें :-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

* यहां हम अगले सबक़ में कुरआन की कुछ सूरतें दे रहे हैं । उनकी मश्क़ (अभ्यास) करें फिर इन्शा अल्लाह आप ख़ुद कुरआन पढ़ सकते हैं ।

* अगर आप कहीं अटक जायें तो प्राइमर दोबारा देख लें ।

* अपने तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) की जांच किसी जानने वाले को सुनाकर करालें: क्योंकि ऐसे बहुत से हर्फ़ हैं जिनकी सही आवाज़ हम हिन्दी में लिख नहीं सकते, मिसाल के तौर पर ا और ع दोनों के लिए हम 'अ' का इस्तेमाल करते हैं जबकि ا और ع की आवाज़ में फ़र्क होता है । इसी तरह ت और ط ث س ص ذ ض और ظ का मामला है ।

अट्ठाईस

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ○	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ - लमीन ○	اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ○
अर्रहमानिर्रहीम○	اَلرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○
मालिकि यौमिद्दीन ○	مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ○
इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तईन○	اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ○
इह्दि-नस्सिरा तल्मुस्तक़ीम ○	اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ـ
सिरातल्लज़ी-न अन अम-त अलैहिम ○	صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ
ग़ैरिल-मग़ज़ूबि	غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ
अलैहिम व ल ज़्ज़ाल्लीन ○	عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ○

नोट :- अगर ○ पर न रुकें तो इस तरह पढ़ेंगे :-

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ - लमीनर्रहमानिर्रहीमि . . . .

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ○	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○
कुल हुवल्लाहु अहद ○	قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○
अल्लाहुस्स - मद ○	اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○
लम् यलिद व लम् यूलद○व लम्	لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ○
यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद ○	وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

अनमोल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
□ **अनूदित .कुरआन मजीद**-रूपान्तरकार : मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां .कुरआन मजीद का सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद। साथ ही, संक्षिप्त व्याख्या भी।	110.00
□ **पवित्र .कुरआन** : एक नज़र में-डॉ० मक़्सूद आलम सिद्दीकी पवित्र कुरआन की मुख्य शिक्षाओं का संकलन।	9.00
□ **.कुरआन मजीद** (केवल हिन्दी अनुवाद)-मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	50.00
□ **ला इलाह इल्लल्लाह : एक वैज्ञानिक समीक्षा**-मु० यूनुस .कुरैशी	45.00
□ **इस्लाम के मूलाधार : निर्माण और विकास**-मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	25.00
□ **मुहम्मद (सल्ल०) : इस्लाम के पैग़म्बर**-प्रो० के० एस० रामाकृष्णाराव	3.00
□ **आख़िरी पैग़म्बर**-सैयद मुहम्मद इक़बाल	1.50
□ **पैग़म्बरे-इस्लाम की सत्यता : ग़ैर-मुस्लिम विद्वानों की नज़र मे** अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी	5.00
□ **इस्लाम : एक अध्ययन**- डॉ० जमीला आली जाफ़री इस्लाम के सारे तत्वों का संक्षिप्त विवरण	3.00
□ **इस्लाम : एक परिचय**- अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी	12.00
□ **इस्लाम और मानव-समाज**- सैयद मु० इक़बाल	4.00
□ **दासता से इस्लाम की ओर**- कोडिक्कल चेलप्पा	10.00
□ **डॉ० अम्बेडकर और इस्लाम**- आर० एस० विद्यार्थी	3.00
□ **मानव-एकता का आधार**- मुहम्मद असलम	6.00
□ **देशवासियों के नाम मधुर संदेश**- डॉ० इल्तिफ़ात अहमद	3.00
□ **शॉर्ट कट उर्दू कोर्स**-डॉ० फ़रहत हुसैन	5.00
□ **साम्प्रदायिक दंगे और हमारी ज़िम्मेदारियां**- इनामुर्रहमान ख़ां	2.50
□ **मानव पर एकेश्वरवाद का प्रभाव**- मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	2.00
□ **विश्व-समाज**-डॉ० इल्तिफ़ात अहमद	2.50

पुस्तक-सूची मुफ़्त मंगायें।

अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव जामिआनगर, नई दिल्ली-25